7 छाया मत छूना

➤ श्री गिरिजाकुमार माथुर

कविता का सार

'धूप के धान' काव्य में संकलित कविता 'छाया मत छूना' में कवि अपने दुखी मन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि बीती बातों का स्मरण न करने में ही बुद्धिमानी है। उनके स्मरण से वह दुखी हो जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाएँगे। उनका जीवन कभी सुखद और सुहावने अनुभवों से भरा था। बीते जीवन के प्रसंगों और जुड़े लोगों को याद करते हुए वे वर्तमान को भूलकर उनमें खो जाते हैं। प्रिया के साथ बिताया समय, स्पर्श का सुख एक दुखद याद मात्र बनकर रह जाती है। उन्हें उजली चाँदनी को देखकर प्रिया के केशों में टँके पुष्पों का भ्रम होता है। सैकड़ों सुंदर छवियाँ यादों में बसी उन्हें अलग-अलग ढंग से प्रभावित करती हैं। वे इनसे मुक्त होकर यथार्थ जीवन को जीने का आग्रह करते हैं।

कवि को जीवन में कभी यश, वैभव, मान और प्रभुता नहीं मिली, फिर भी वे इनकी मृगतृष्णा में बेतहाशा दौड़ते रहे। जीवन में समय रहते किसी भी सुख के न मिलने और सदा सब कुछ छिनते चले जाने से अत्यंत दुखी हो वे यह नहीं समझ पाए कि हर चाँदनी रात अपने पीछे एक काली अँधेरी रात भी लिए रहती है। सुखों के पीछे दुख भी छिपे रहते हैं। अत: केवल इस सत्य को समझकर यथार्थ का सामना करना चाहिए। दुविधा में पड़कर मनुष्य का साहस कम ही होता है और पथ दिखाई नहीं देता। अत: जो कुछ अब तक प्राप्त नहीं हुआ है, उसका स्मरण न करते हुए आगे बढ़ने को ही अपनी पहचान बनानी चाहिए। यथार्थ में जीना ही मनुष्य का सच्चा जीवन है।

कविता की व्याख्या

(1)

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ - **छाया** = परछाईं, भ्रम, दुविधा, **दूना** = दुगुना, **सुरंग** = रंग-बिरंगी, **सुधियाँ** = यादें, **सुहावनी** = आनंद देने वाली, **छवियों** = चित्रों, **चित्र-गंध** = चित्र की याद के साथ-साथ उसके आस-पास की सभी चीज़ों की गंध का अनुभव, **मनभावनी** = मन को लुभाने वाली, **यामिनी** = तारों भरी चाँदनी रात, **कुंतल** = लंबे केश, **छुअन** = स्पर्श।

व्याख्या : कवि हम सब से कहते हैं कि अपने अतीत जीवन की यादों को बार-बार याद करने से हमारा मन और अधिक दुखी हो जाएगा। यह तो मानी हुई बात है कि समय ठहरता नहीं है। जो अभी है, वह भी अगले पल अतीत बन जाएगा। इसी प्रकार यदि हमने पीछे कभी कुछ सुख के पल बिताए हैं तो उन्हें याद करके हमें इस समय सुख का अनुभव नहीं होगा, बल्कि उनके न रहने का दुख हमें सालता रहेगा। हर व्यक्ति के जीवन में कुछ रंग-बिरंगी सुखद यादें रहती हैं, जिनके सहारे व्यक्ति अपने शेष जीवन को बिता देना चाहता है, किंतु कवि हमें सचेत करते हुए कहते हैं कि तारों भरी चाँदनी रात, जब हम प्रिया के संग रंगीन सपनों में खोए रहते हैं, वह बीत गई। अब तो केवल प्रिया के सुंदर केशों में गुँथे महकते फूलों की सुगंध की याद भर रह गई है। अब इस समय न तो प्रिया पास में है और न वे सुख के पल, किंतु इस वियोग की घड़ी में उस समय की सारी चीज़ों की यादें मधुर मनभावन सुगंध-सी हमारे मन में बसी हुई हैं। कवि उन यादों को कुरेदने को मना करते हैं क्योंकि अब तो वे पल वापस नहीं आएँगे, केवल हमारा वर्तमान दुखपूर्ण और भारी हो जाएगा। इसलिए कवि अतीत की छाया को छूने का निषेध करते हैं। पुरानी बातों की यादें वर्तमान के घावों को और हरा कर देती हैं, तन-मन और अधिक दुखी हो जाता है।

विशेष–

(*i*) कविता सरल व खड़ी बोली में लिखी गई है।

(*ii*) कहीं-कहीं तत्सम और तद्भव शब्दों के पुट मिलते हैं, जैसे– कुंतल, तन-सुगंध, यामिनी, (तत्सम), छुअन, दूना (तद्भव) आदि।

(*iii*) 'दुख दूना और सुरंग सुधियाँ सुहावनी', में अनुप्रास अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है।

(*iv*) चित्र-गंध में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(*v*) 'तन-सुगंध' सामासिक शब्द है।

(*vi*) सुंदर लययुक्त शब्दावली कविता के भावों को और अधिक वाङ्मय बनाती हैं।

(*vii*) कवि वर्तमान में जीने की प्रेरणा देते हैं।

(*viii*) कविता में छायावाद का पुट स्पष्टत: दिखाई पड़ता है।

(2)

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया!

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू उसका कर पूजन-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ : यश = प्रसिद्धि, **वैभव** = धन-संपत्ति, ऐश्वर्य, **मान** = सम्मान, **सरमाया** = पूँजी, मूल धन, **भरमाया** = भ्रम में डाला, **प्रभुता** = बड़प्पन, **प्रभुता का शरण-बिंब** = बड़प्पन का अहसास, **मृगतृष्णा** = कड़ी धूप में रेतीले मैदानों में जल के होने का अहसास, छलावा, **चंद्रिका** = चाँदनी, **कृष्णा** = काली, अंधकारमयी, **यथार्थ** = सत्य, वास्तविकता, सच्चाई।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि लोग नाम-यश, मान, संपत्ति, धन-दौलत, ऐश्वर्य आदि के पीछे सारी जिंदगी भागते रहते हैं क्योंकि आम लोगों के लिए ये ही चीज़ें सुख देने वाली होती हैं। किंतु कवि कहते हैं कि जिस प्रकार रेगिस्तान में पानी की आस में पशु इधर से उधर भटकते रहते हैं और दूर कहीं सूर्य की तेज़ किरणों से उत्पन्न जल का आभास देखकर ठगे जाते हैं, ठीक उसी प्रकार हम सब मनुष्य भी सांसारिक सुखों के पीछे मृगतृष्णा के समान भागते रहते हैं। हम जितना अधिक यश, नाम, मान, धन-संपत्ति, वैभव, ऐश्वर्य और बड़प्पन की चाह करते हैं, उतना ही अधिक इन सब चीज़ों की चाहत बढ़ती जाती है। इस चाहत का कोई अंत नहीं। कवि कहते हैं कि सांसारिक सुखों के पीछे भागने से अच्छा अपने यथार्थ को स्वीकार करना है। जैसे हर चाँदनी रात के बाद एक बार अमावस्या की काली रात आती है, उसी प्रकार सुख-दुख का पहिया निरंतर चलता ही रहता है। सुख-दुख कुछ भी नित्य या स्थायी नहीं है। इसलिए कवि व्यक्ति को कठोर वास्तविकता के धरातल पर जीने की सलाह देते हैं। सच्चाई को स्वीकार करने में ही हमारी भलाई है, अन्यथा अतीत के सुखद क्षणों को वर्तमान में याद करते हुए वर्तमान के दुख को हम और बढ़ा लेंगे।

विशेष–

(*i*) कवि वर्तमान में जीने की सलाह देते हैं। यथार्थ को स्वीकार करने में ही हमारी भलाई है।

(*ii*) संस्कृत के तत्सम शब्दों का समुचित प्रयोग हुआ है। वैसे इसकी भाषा सहज-सरल खड़ी बोली है।

(*iii*) इस कविता में दार्शनिकता और छायावाद का पुट है। सुख-दुख के निरंतर गतिशील होने की बात बताई गई है।

(*iv*) चंद्रिका और अमावस्या (कृष्णा रात) की उपमा पद्यांश में अनोखा भाव भर देती है।

(*v*) 'शरण-बिंब' में रूपक अलंकार है।

(*vi*) मृगतृष्णा का उदाहरण देकर कवि ने सब लोगों को यश, मान, धन-संपत्ति के पीछे भागने के लिए निषेध किया है।

(3)

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

शब्दार्थ : दुविधा-हत = दुविधा में फँसा हुआ, क्या करें और क्या न करें की स्थिति में होना, असमंजस में होना, **पंथ** = राह, रास्ता, **देह** = तन, शरीर, **शरद** = एक ऋतु का नाम, **रस-बसंत** = रस से भरपूर मतवाली वसंत ऋतु, **वरण** = चुनना, अपनाना।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि मनुष्य सुख की आस में इधर-उधर भटकता रहता है, पर हमेशा उसे अपने जीवन में इच्छित वस्तु मिल नहीं जाती। जो कुछ उसे मिलता है, उससे उसका तन सुखी हो सकता है किंतु मन संतुष्ट नहीं होता। कवि कहते हैं कि मानव-मन के दुखों का अंत नहीं। एक पाने पर दूसरा पाने की लालसा जगती है, दूसरा पाने पर तीसरे की इच्छा होती है। इस प्रकार लोभी मन कभी सुखी नहीं होता। किसी भी प्रकार से जीवन-संघर्ष में विजयी होने का मन में साहस तो है, परंतु साथ में दुविधा की स्थिति भी बनी रहती है। कवि कहते हैं कि 'क्या करूँ और क्या न करूँ' वाली असमंजसपूर्ण स्थिति में व्यक्ति को कोई रास्ता नहीं सूझता और वह अधिक निराश हो जाता है।

कवि कहते हैं कि मनुष्य को यह कष्ट बार-बार सताता रहता है कि जो चीज़ उसे ठीक समय पर मिलनी थी, वह न मिल पाई। यौवनावस्था में प्रिय के सामीप्य का सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। यदि बाद में वह सुख मिले तो क्या लाभ? 'का बरखा जब कृषि सुखाने' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए कवि कहते हैं कि उचित समय में इच्छित वस्तु का मिलना ही वास्तव में सुखद होता है। इसके विपरीत, समय बीत जाने पर उसके मिलने से कुछ लाभ नहीं होता। जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को यदि चाँद न निकले तो शरद पूर्णिमा का सारा सौंदर्य और सारा महत्व समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार कवि के जीवन के स्वर्णिम काल में उन्हें सुख-संपदा नहीं मिली, इस बात का दुख उन्हें हमेशा सताता रहता है। मतवाली-रसभरी बसंत ऋतु के बीत जाने पर यदि फूल खिले तो क्या हुआ? बसंत तो रंग-बिरंगे सुगंधित फूलों की ऋतु है। ऐसे समय यदि फूल ही न हो तो वह कैसी बसंत होगी? निश्चित ही वह मतवाली, सुवासित और सुखदायी न होगी।

इतना सब कुछ होने पर भी कवि निराश-हताश नहीं होते। अतीत में जो कुछ उन्हें मिलना चाहिए था, उसके न मिलने पर भी वे आँसू नहीं बहाते। कवि पूरी तरह से आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं और अपने अतीत के दुखों को भुलाकर जो कुछ भी वर्तमान में मिलता है, उसे सहर्ष अपनाकर अपने वर्तमान तथा भविष्य को सुखी बनाने की नेक सलाह देते हैं। इसीलिए कवि गिरिजा कुमार माथुर बारंबार हमें अतीत की स्मृति रूपी परछाईं को छूने से मना करते हैं। उनके अनुसार अतीत के सुखद क्षणों की स्मृतियाँ हमारे वर्तमान समय के दुखों को दुगुना कर देती हैं। इसलिए उन्हें भुलाना ही बेहतर है।

विशेष–

(*i*) सहज सरल खड़ी बोली में यह कविता लिखी गई है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

(*ii*) कहीं-कहीं संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे– दुविधा-हत साहस।

(*iii*) कवि ने इस पद्यांश में चाँद, शरद पूनम की रात, रस-बसंत, फूलों का खिलना आदि प्रतीकों का सुंदर प्रयोग किया है।

(*iv*) प्रस्तुत पद्यांश में दार्शनिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। साथ ही छायावाद का प्रभाव भी लक्षित होता है।

(*v*) कवि पाठकों के मन में प्रतीकात्मक शैली द्वारा आशावादी दृष्टिकोण भर देना चाहते हैं।

समेटिव असेसमेंट के लिए

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर : कठिन यथार्थ का तात्पर्य जीवन के कटु सत्य से है। जीवन की वास्तविकता से मुँह मोड़कर अतीत की स्मृतियों में भटकने से हमें दुख के सिवा और कुछ नहीं मिल सकता। अत: कवि हमें जीवन के कठोर सत्य का सामना करने और उसे पूजने यानी ग्रहण करने की प्रेरणा देते हैं ताकि हमारा जीवन सुखी हो सके।

2. भाव स्पष्ट कीजिए –

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

उत्तर : स्वयं को प्रभुत्वसंपन्न करने अथवा स्वयं श्रेष्ठ बनने की प्रबल इच्छा रखते हुए संघर्ष करना एक मृगतृष्णा के समान है। जैसे रेगिस्तान में प्यासा हिरण सूरज की किरणों के रेत पर पड़ने से होने वाले परावर्तन को चमचमाती लहरों से युक्त बहता हुआ पानी समझकर सुधबुध खोकर उसे पाने के लिए दौड़ता है और वहाँ पहुँचकर कुछ नहीं पाता है, वैसे ही प्रभुतासंपन्न बनकर जीवन के सच्चे सुख को ढूँढ़ने की लालसा मनुष्य को केवल अंधी दौड़ देती है, कोई सुख नहीं। जैसे हर चाँदनी रात के बाद अमावस्या की गहरी अँधेरी काली रात आती है, वैसे ही जीवन में हर सुख के पीछे एक दुख भी रहता है। अत: हमें सुख के साथ दुख को भी अपनाना चाहिए।

3. 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'छाया' शब्द यहाँ बीती बातों को स्मरण करने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। कवि ने उसे छूने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि उसका स्पर्श दुखदायी है। अर्थात उन्हें याद करना दुखों को दुगुना करने वाला है।

4. कविता में विशेषण के प्रयोग से शब्दों के अर्थ में विशेष प्रभाव पड़ता है, जैसे कठिन यथार्थ । कविता में आए ऐसे अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए और यह भी लिखिए कि इससे शब्दों के अर्थ में क्या विशिष्टता पैदा हुई?

उत्तर : कविता में संज्ञा से पहले बने विशेषण के प्रयोग ने शिल्प सौंदर्य में वृद्धि की है।

ये शब्द हैं –

1. सुरंग सुधियाँ- यह रंगीन यादों को और सुखद-सुहावनेपन को दर्शाता है।
2. जीवित क्षण – जीवन कड़ी उमंग से भरकर जिए गए क्षणों को दर्शाता है।
3. एक रात – एक ऐसी रात जो विशेष महत्व रखती है, की ओर संकेत करती है।
4. हत साहस – कम या समाप्त हुआ साहस जो मनुष्य को निराश कर दुखी बना देता है।
5. शरद-रात – शरद पूर्णिमा के अनुपम सौंदर्य को प्रत्यक्ष कर देती है। उजली चाँदनी से भरी उस सुखद रात की याद कराती है।
6. रस बसंत – ऋतु बसंत के मादक सुंदर सुखद रूप को दर्शाता है।

5. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : मरुस्थल में रेत पर सूरज की सीधी किरणों के पड़ने से परावर्तन के कारण पानी की चाँदी-सी चमचमाती लहरों की भ्रामक स्थिति को मृगतृष्णा कहते हैं। इसे दूर से देखकर यात्री या हिरण पानी की तलाश में वहाँ पहुँचते हैं, पर पानी न पाकर निराश और दुखी हो जाते हैं।

कविता में मृगतृष्णा शब्द का प्रयोग मनुष्य के आजीवन यश, वैभव, मान, सम्मान आदि पाने के लिए प्रयत्नशील होने और अंत में निराश और हतोत्साहित हो जाने के लिए हुआ है।

6. 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' यह भाव कविता की किस पंक्ति में झलकता है?

उत्तर : कविता की इस पंक्ति में यह भाव झलकता है –

'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण।'

7. कविता में व्यक्त दुख के कारण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस कविता में दुख के कई कारण बताए गए हैं। जैसे –

- हम अतीत की सुखद स्मृतियों को याद करके अपने वर्तमान जीवन को दुखमय बना देते हैं।
- यदि वर्तमान में थोड़ा-सा भी दुख मिलता है तो हम

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

उसकी तुलना अपने बीते दिनों से करने लगते हैं। इस प्रकार हमारा दुख और भी बढ़ जाता है।

- हम यथार्थ को न ग्रहण कर पुरानी यादों के पीछे भागते हैं और कल्पनालोक में सुख की तलाश करते हैं, जो कि अव्यावहारिक है। इससे भी हमारा दुख बढ़ता है।
- हम विभिन्न सुख-सुविधाओं की मृगतृष्णा के पीछे आजीवका भटकते रहते हैं। अंततः वास्तविक सुख न पाकर हताश और दुखी हो जाते हैं।
- दुख का अन्यतम कारण समय पर किसी वस्तु का न मिलना भी है। समय पर प्राप्त वस्तु का और समय पर किए गए उचित काम का फल मधुर होता है।

रचना और अभिव्यक्ति

8. 'जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी' से कवि का अभिप्राय जीवन की मधुर स्मृतियों से है। आपने अपने जीवन की कौन-कौन सी स्मृतियाँ सँजो रखी हैं?

उत्तर : जीवन की मधुर स्मृतियाँ किसे प्रिय नहीं? मैं भी उन्हें कैसे भूल सकता हूँ। मेरा इन स्मृतियों के साथ बहुत गहराई से जुड़ने का एक प्रमुख कारण मेरी माँ का बचपन में ही एक भयानक बीमारी से ग्रस्त होकर सदा के लिए मुझे अकेले छोड़ जाना है। पिता जी ने मेरी बहुत अच्छी देखभाल की। माँ की कमी को हर तरह से दूर किया। जब मैं बड़ा हुआ तो मुझे देहरादून के एक बहुत ही अच्छे विद्यालय में भरती कर दिया। पिता जी समय-समय पर मुझसे मिलने आते। कभी-कभी ऑफिस से छुट्टी लेकर किसी होटल में रुककर रोज शाम का समय मेरे साथ बिताते। एक बार गर्मी में मैं अपने मामा जी के घर गया। वहाँ मेरा जन्मदिन पड़ा। मामी जी ने ढेर सारी मेरी पसंद की चीज़ें मँगाईं और मामी जी की बेटी ने अपने सारे मित्रों को बुलाकर खूब ज़ोर-शोर से मेरा जन्मदिन मनाया। मुझे मामी जी में अपनी खोई माँ नज़र आने लगीं। उन्होंने जन्मदिन की बहुत अच्छी कहानी सुनाई, जिसमें घोड़े पर बैठकर धरती का राजकुमार परियों के देश में पहाड़ से एक बहुत बड़ा सूरज धरती के लिए लाने जाता है। मैं बड़ा था फिर भी कहानी जैसे मुझमें बस गई। आँख लग गई। खिड़की से सूरज का लाल-लाल गोला दिखाई देने लगा। मैंने मामी जी को देखा। उनकी आँखें खुल गई थीं। वे मुझे एकटक सूरज को देखते देख रहीं थीं। मैंने उनकी तरफ़ देखा तो मुझे लगा, जैसे कह रही हों-सचमुच तुम ले आए धरती पर सूरज! तुम्हीं हो धरती के वो राजकुमार।

आज जब मैं अपनी सफलता पर विचार करता हूँ तो मुझे लगता है कि इसमें मामी की सुनाई कहानी के राजकुमार के धरती पर सूरज के उतारे जाने का ही प्रभाव है। मेरे लिए मामी माँ बन गईं। मैं उन्हें याद करके सदा एक खुशी महसूस करता हूँ।

9. क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?' कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर भी उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। क्या आप ऐसा मानते हैं? तर्क सहित लिखिए।

उत्तर : कवि का मानना युक्तिसंगत है क्योंकि 'देर आयद दुरुस्त आयद' वाली कहावत चरितार्थ होती है। जैसे कि संतान प्राप्ति के इच्छुक दंपती को यदि देर से भी संतान-सुख मिले तो भी वे अत्यंत आनंदित हो जाते हैं। किंतु कभी-कभी जीवन में कुछ चीज़ों की महत्ता समय पर ही निर्भर करती है। जैसे कि परीक्षा के पूर्व किसी योग्य शिक्षिका का उचित मार्गदर्शन विद्यार्थी को सफलता के सोपान पर पहुँचा देता है, किंतु यदि यही मार्गदर्शन समय पर नहीं हुआ यानी परीक्षा-पूर्व नहीं हुआ, तो उसका कोई महत्व नहीं रह जाता।

अन्य परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर (CCE पद्धति पर आधारित)

(I) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

[CBSE 2011 (Term – II)]

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

1. 'छाया' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए। 'छाया' का प्रतीकार्थ। है-

उत्तर : अतीत की सुखद यादें। कवि कहना चाहते हैं कि युवावस्था में प्रिय के साथ विताया गया सुख का समय बार-बार याद मत करो क्योंकि उससे केवल दुख होगा। वे छाया (प्रतिबिंब या छलावा मात्र है वे अब कभी प्राप्त नहीं होंगे।

2. चाँदनी को देखकर कवि को किसकी याद आती है?

उत्तर : चाँदनी को देखकर कवि को अपनी प्रिया के केशों में गुँथे हुए फूलों की याद आती है। उन्हें अपने प्रेम के सुहाने दिनों की याद आ जाती है और उन्हें प्रिया की छुअन का एहसास होता है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

3. 'भूली-सी एक छुअन से' कवि का क्या आशय है?

उत्तर : कवि का मानना है कि जब हम अपने बीते हुए सुखद दिनों को याद करते है तब भूली हुई बातें हमारे मन को बरबस छू लेती हैं। वे छुअन भरे क्षण हमारे पुराने दिनों को मानो हमारे सामने जीवित कर देते हैं।

(II) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया!
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

1. भरमाया से क्या आशय है?

उत्तर : कवि के अनुसार यश, वैभव, मान, सम्मान सब बेकार हैं। मनुष्य इनके पीछे जितना दौड़ता है उतना ही अधिक भ्रमित होता है।

2. 'मृगतृष्णा' का प्रयोग काव्यांश में किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : 'मृगतृष्णा' का प्रयोग काव्यांश में उस इच्छा (चाहत) से जो निरंतर बढ़ी ही रहती है कभी पूरी नहीं होती के अर्थ में हुआ है।

3. 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा' पंक्ति के माध्यम से क्या विशेष बात की गई है?

उत्तर : स्वयं को प्रभुत्व संपन्न करने अथवा स्वयं को श्रेष्ठ बनाने की प्रबल इच्छा रखते हुए संघर्ष करना केवल मृगतृष्णा है अर्थात एक छलावा है। क्योंकि जिस तरह रेगिस्तान में हिरण मृगतृष्णा को पानी समझकर भागता रहता है किंतु उसे कुछ पानी की प्राप्ति नहीं होती उसी प्रकार प्रभुत्व संपन्न बनकर जीवन जीने से भी सच्चा सुख नहीं मिलता।

4. कवि ने चंद्रिका और कृष्ण रात का उल्लेख यहाँ क्यों किया है?

उत्तर : कवि ने चंद्रिका को खुशी के प्रतीक के रूप में और कृष्ण रात को दुख का प्रतीक माना है। हर सुख के पीछे दुख भी छिपा रहता है अत: जीवन में सुख-दुख आते-जाते रहते हैं।

5. 'यथार्थ का पूजन करने' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : जो भी सच्चाई हमारे सामने है, हमें उसको अपनाकर खुशी से जीना चाहिए। अन्यथा अतीत को याद करके, हम अपने वर्तमान के दुख को और बढ़ा लेंगे।

(III) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

[CBSE 2011 (Term – II)]

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

1. 'कोई मार्ग दिखाई नहीं देता' - कवि ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर : 'कोई मार्ग दिखाई नहीं देता' ऐसा कवि ने इसलिए कहा क्योंकि वे कई बार यश, वैभव, मान सम्मान तथा प्रभुता पाने के लिए प्रयास कर चुके हैं किंतु यह सब उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। अत: अब वे दुविधा में फँस गए हैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए हैं कि क्या करें और क्या न करें।

2. 'समय बीत जाने पर फूल के खिलने से' किस बात की ओर संकेत किया गया है? [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'समय बीत जाने पर फूल खिलने से' कवि संकेत करता है कि समय निकल जाने पर वांछित वस्तु के प्राप्त होने से कोई लाभ नहीं होता। जैसे यौवनावस्था में सुख वैभव और प्रिय का साथ न मिले, बाद वृद्धावस्था में मिले तो उससे क्या लाभ?

3. 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्यवरण, का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि उपर्युक्त पंक्ति में कहना चाहता है कि अतीत में तुमने जिस चीज के लिए प्रयास किया था, यदि वह नहीं मिली तो उसके लिए सोच-विचार मत करो। उसे भूल जाओ। भविष्य के बारे में सोचो। हो सकता है कि भविष्य में तुम्हारे प्रयास सफल हो जाएँ। क्योंकि अतीत के बारे में सोचते रहने से तुम्हारा भविष्य भी खराब हो जाएगा।

4. 'दुविधा-हत साहस' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : कवि कहना चाहते हैं कि सही-गलत, सफलता-असफलता के भ्रम के कारण मन में साहस नहीं जग पाता। जब मनुष्य का मन ही सही निर्णय नहीं कर पाता, तो उसका साहस भी समाप्त हो जाता है और वह हताश हो जाता है।

5. शरद-रात की किस विशेषता की ओर कवि ने संकेत किया है?

उत्तर : कवि ने यहाँ 'शरद-रात' को खुशियों का प्रतीक माना है। चाँद का खिलना प्रतीक है हमारे मन के अनुकूल काम होने का अथवा इच्छित वस्तु पाने का।

6. कवि किसे वरण करने को कहते हैं?

उत्तर : कवि हमें अपने वर्तमान के सभी कष्टों, असफलताओं को भूल कर आने वाले सुंदर भविष्य का वरण करने को कहते हैं।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

अति लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. कवि को प्रिय की कौन-कौन सी स्मृतियाँ बार-बार घेर लेती हैं?

उत्तर : चाँदनी रात देखकर अपनी प्रिया के केशों में गुँथे महकते फूलों की सुगंध की याद, उसके साथ बिताए सुख के पल तथा उस समय की सभी चीज़ों की यादें मधुर मनभावन सुगंध की स्मृतियाँ कवि को बार-बार घेर लेती हैं।

2. 'छाया मत छूना' कविता के माध्यम से कवि ने हमें क्या संदेश दिया है? **[CBSE 2011 (Term – II)]**

उत्तर : 'छाया मत छूना मन' कविता के माध्यम से कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि जो क्षण बीत चुके हैं, उनकी यादों में नहीं जीना चाहिए। यथार्थ में जीना ही मनुष्य का सच्चा जीवन है। इसलिए मनुष्य को अतीत को भूलकर यथार्थ में जीना चाहिए।

3. कविता में 'छाया' शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? कवि उसे छूने से क्यों मना करता है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : कविता में 'छाया' शब्द का प्रयोग काल्पनिक दुनिया के अर्थ में हुआ है। कवि काल्पनिक लोक में विचरण करने के स्थान पर जीवन के यथार्थ का सामना करने को कहते हैं। छाया भ्रम अथवा छलावा मात्र है।

4. 'मृगतृष्णा' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मृगतृष्णा का आशय है किसी चीज़ का भ्रम होना। रेगिस्तान की रेत पर जब धूप चमकती है तब हिरन उसे पानी समझ कर उसकी ओर भागता है। किंतु यह एक छलावा मात्र है उसकी प्यास उससे कभी नहीं बुझती।

5. कवि जीवन में क्या पाना चाहते हैं?

उत्तर : कवि जीवन में मान-सम्मान, यश और वैभव पाना चाहते हैं। ये सब मृगतृष्णा ही हैं। इनके पीछे भटकने से केवल दुख मिलता है। ये छलावे के समान हैं।

6. कवि ने सुधियों का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर : कवि का मानना है कि सुधियाँ रंग-बिरंगी, सुखद और मनभावन होती हैं। उनमें सुंदर और मनमोहक दृश्य समाए होते हैं। बीते हुए क्षण मानो सजीव हो उठते हैं।

7. किसे पंथ नहीं दिखता है?

उत्तर : मनुष्य सुख की आस में इधर-उधर भटकता है। मन की दुविधाओं के कारण उसे सही मार्ग नहीं दिखाई देता। इसी कारण उसका साहस भी समाप्त हो जाता है।

8. कवि किसे वरण करने को कहते हैं?

उत्तर : कवि भविष्य का वरण करने को कहते हैं। पुरानी बातें याद करने से कोई लाभ नहीं। इससे वर्तमान भी बिगड़ता है। जीवन के कठोर यथार्थ को स्वीकार करना चाहिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. छाया छूने से कवि का क्या तात्पर्य है? इसे छूने से क्यों मना किया है?

उत्तर : छाया छूने से कवि का तात्पर्य है पुरानी मीठी यादों में जीना, बीती बातों को याद करना। बीती बातों का स्मरण न करना ही बुद्धिमानी है। उनको याद करने से व्यक्ति दुखी हो जाता है। दुखी होकर जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाता। पुरानी यादों में जीने का परिणाम भी दुखमय होता है। अपने वर्तमान जीवन को वह और दुखी बना लेता है।

2. कवि के अनुसार यथार्थ क्यों कठिन है? इसके बाद भी कवि यथार्थ पूजन का आग्रह क्यों करते हैं?

उत्तर : जीवन में हर सुख के पीछे एक दुख छिपा रहता है, यही जीवन का यथार्थ है। जीवन की वास्तविकता से मुँह मोड़कर अतीत की स्मृतियों में भटकने से हमें दुख ही मिलता है। इसी कारण कवि हमें जीवन के कठोर सत्य का सामना करने और उसे ग्रहण करने की प्रेरणा देते हैं ताकि हमारा जीवन सुखी हो सके।

3. मनुष्य का मन दुविधाग्रस्त कब होता है तथा उसके किन दुष्परिणामों को उसे भुगतना पड़ता है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : मनुष्य का मन दुविधाग्रस्त तब होता है जब वह शुभ-अशुभ, सफलता-असफलता, उचित-अनुचित भ्रम के कारण मन में साहस नहीं जगा पाता। उसका मन सही निर्णय नहीं ले पाता। इस दुविधाग्रस्त स्थिति से उसे कोई रास्ता नहीं सूझता। वह और अधिक निराश हो जाता है और वह किसी एक दिशा में चल नहीं पाता।

4. 'छाया मत छूना' कविता का प्रतिपाद्य संक्षेप में लिखिए।

[CBSE 2011 (Term – II)]

अथवा

'छाया मत छूना' कविता से कवि का क्या अभिप्राय है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'छाया तम छूना' कविता में कवि कहना चाहते हैं कि बीती बातों को याद करना बुद्धिमानी नहीं। इससे केवल दुख ही मिलेगा तथा हमारा विकास रुक जाएगा। कवि यह भी बताते हैं कि हमें यश, वैभव, मान और प्रभुता पाने के लिए अधिक भाग-दौड़ नहीं करनी चाहिए। क्योंकि यह सब कभी नहीं मिलता। और यदि मिलता भी है तो उससे सुख शान्ति नहीं मिलती इन्हें पाने की इच्छा बढ़ती ही जाती है। कभी-कभी हमें ये सुख तब मिलते हैं जब हमारे सुख भोगने के दिन बीत जाते हैं। अत: इनसे वास्तविक सुख नहीं मिलता, यह एक मृगतृष्णा मात्र है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

5. 'क्या हुआ जो खिला फूल वसंत जाने पर' का आशय स्पष्ट कीजिए? [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'क्या हुआ जो खिला फूल वसंत जाने पर' का आशय है कि समय निकल जाने पर कार्य-सिद्धि होने से अर्थात् सुख और प्रभुता की प्राप्ति होने से लाभ नहीं होता। कहते हैं न कि 'का वर्षा जब कृषि सुखाने।' कहने का आशय है कि सुख पाने की लालसा में मनुष्य का सुख भोगने का समय ही निकल जाता है और सुख मिलता है बाद में ऐसे सुख से कोई लाभ नहीं।

6. 'भूली-सी एक छुअन' में कवि के कौन-कौन से अनुभव शामिल हैं?

उत्तर : कवि जब अपने बीते सुखद दिनों को याद करते हैं तब भूली हुई बहुत-सी बातें उनके मन को बरबस छू लेती हैं। वे छुअन-भरे क्षण उनके बीते दिनों को जीवंत बना देते हैं। इस वियोग की घड़ी में उस समय की सभी यादें मधुर मनभावन सुगंध-सी उनके मन में बसी हैं। प्रिया की छुअन का एहसास भी होता है। प्रिया-मिलन की स्मृतियाँ भी उनके मन को भरमाती हैं।

7. कवि के अनुसार यथार्थ क्यों कठिन है? उसके बाद भी कवि यथार्थ-पूजन का आग्रह क्यों करते हैं?

उत्तर : यथार्थ का तात्पर्य जीवन के कटु सत्य से है। हर चाँदनी रात के पीछे एक गहरी काली रात छिपी होती है। यही जीवन की सच्चाई है। व्यक्ति को यह समझना चाहिए। कल्पनाओं और छायाओं में सुख खोजने के बजाए कठोर सच्चाइयों का सामना करना चाहिए। उन्हें ही सच मानकर अपनाना चाहिए। उन्हें स्वीकार कर जीने का रास्ता निकालना चाहिए। जीवन का जो भी सुख-दुख सामने है उसे अपनाकर खुशी से जीना चाहिए। विगत जीवन से जुड़ना और वर्तमान से भागना व्यर्थ है।

8. 'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुखों के कारणों को लिखिए। [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : इस कविता में कवि ने अनेक दुखों को व्यक्त किया है। जिसका मूल कारण है — यथार्थ से भागना। व्यक्ति अपने अभावों और दुखों को याद कर अपने वर्तमान जीवन को और अधिक दुखी और अभावग्रस्त बना लेता है। काल्पनिकता की दुनिया एक छलावा है। वह दुख का कारण बनती है। हर चाँदनी रात के पीछे एक काली रात होती है यानी सुख के पीछ दुख छिपा रहता है।

9. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा' के माध्यम से कवि जीवन के किस सत्य को उद्‌घाटित करना चाहते हैं?

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार हर चाँदनी रात के बाद एक बार अमावस्या की काली रात आती है, उसी प्रकार सुख के बाद दुख भी अवश्य आता है। सुख-दुख का पहिया निरंतर चलता रहता है। इसलिए व्यक्ति को इसी जीवन-सत्य के अनुरूप जीने की सलाह देते हैं।

10. मनुष्य दुविधाग्रस्त कब होता है तथा उसके किन दुष्परिणामों को उसे भुगतना पड़ता है?

उत्तर : मानव-मन के दुखों का अंत नहीं है। एक पाने पर दूसरा, फिर तीसरा पाने की इच्छा बनी रहती है। किसी भी प्रकार से जीवन-संघर्ष में विजयी होने का मन में साहस होता है, परंतु सुख की आस में मनुष्य इधर-उधर भटकता रहता है। ऐसे में दुविधा की स्थिति बनी रहती है। उसे कोई रास्ता नहीं सूझता और वह अधिक निराश हो जाता है।

11. 'जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का भावार्थ है कि मनुष्य यश-मान, सुख-वैभव, ऐश्वर्य और बड़प्पन की चाहत में इनके पीछे जितना दौड़ता है उतना ही भटकता है। अत: मनुष्य सांसारिक सुखों के पीछे मृगतृष्णा के समान भागता है और उतना ही श्रमित होता है।

12. आपके अनुसार कविता किस पर आधारित है? सिद्‌ध कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत कविता आशावाद और यथार्थवाद पर आधारित है। कवि बीती बातों तथा असफलताओं को याद करने से मना करते हैं। उनका मानना है कि उन्हें याद करने से जीवन नष्ट होता है। सुख की प्राप्ति नहीं होती। कवि का कहना है कि सब आशावादी बनें। दूसरी ओर वे मनुष्य को सांसारिक सुख, कल्पनाओं और अवास्तविकताओं के पीछे मृगतृष्णा के समान भागने से मना करते हैं। वे उन्हें कठोर वास्तविकता के धरातल पर जीने की सलाह देते हैं। वे सच्चाई को स्वीकार करने में मनुष्य की भलाई मानते हैं। इससे सिद्‌ध होता है कि कविता आशावाद और यथार्थवाद पर आधारित है।

13. 'तन-सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी' पंक्ति का आधार समझाइए।

उत्तर : 'तन-सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी' का आधार यह है कि जिस तरह प्रिया के साथ बिताई गई रात बीत गई केवल यादें शेष रह गईं। उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में अतीत का समय बीत जाता है और उस समय भोगे गए सुखों की याद (बातें) शेष रह जाती हैं। अत: हमें पिछली बातों को याद कर दुखी नहीं होना चाहिए। हमें आगे के बारे में सोचना चाहिए। यही सनातन सत्य है।

14. कविता में कवि के अनुसार यश, वैभव, मान और धन व्यर्थ क्यों है? [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : कविता के अनुसार यश, वैभव, मान और धन व्यर्थ इसलिए हैं क्योंकि इनकी कामना और प्राप्ति एक मृगतृष्णा के समान

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

है। इन्हें प्राप्त कर लेने पर भी मनुष्य को सुख-शांति की प्राप्ति नहीं होती। केवल बढ़ती है तो इन्हें और पाने की चाहना।

15. चाँद के बिना शरद-रात जीवन की किस स्थिति को प्रकट करती है? 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'चाँद के बिना शरद-रात' जीवन की किस स्थिति को प्रकट करती है जब हमें किसी वस्तु की आवश्यकता होती है किंतु वह हमें प्राप्त नहीं होती है जैसे कि यौवनावस्था में प्रिय का साथ और सामीप्य मिलना चाहिए था किंतु वह नहीं मिला।

16. 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है' इस पंक्ति में मानव के लिए क्या संदेश निहित है?

[CBSE 2011 (Term – II)]

उत्तर : 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है।' इस पंक्ति में मानव के लिए यह संदेश निहित है कि मनुष्य अधिकाधिक धन-संग्रह एवं प्रभुता पाने का प्रयास न करें क्योंकि यह एक मृगतृष्णा है। प्रभुत्व संपन्न हो जाने पर भी मनुष्य को संतोष नहीं होता। सुख-चैन नहीं मिलता। एक के बाद एक सुख पाने की तथा साम्राज्य को अधिकाधिक बढ़ाने की इच्छा होती है। अत: प्रभुता पाने हेतु अधिक न भागें।

फ़ॉरमेटिव असेसमेंट के लिए

'छाया मत छूना' कविता के माध्यम से कवि गिरिजा कुमार माथुर यह कहना चाहते हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों की उपस्थिति है। इसी सच को स्वीकार कर जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कक्षा-कार्य

अध्यापक/अध्यापिका बीच-बीच में छात्र/छात्राओं से कविता से संबंधित प्रश्न भी पूछें ताकि उनकी सहभागिता बनी रहे।

- इस कविता में किस भाषा का प्रयोग हुआ है?
- कविता में प्रयुक्त 'प्रतीकों' का उल्लेख कीजिए।
- 'छाया' शब्द का क्या अर्थ है?
- कुंतल, यामिनी, तन-सुगंध, वैभव, प्रभुता आदि शब्दों के तद्भव शब्द लिखें।

गृह-कार्य

अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में छात्र/छात्राओं को पाठ से संबंधित निम्नलिखित कार्य गृहकार्य के रूप में दे सकते हैं।

- श्री गिरिजा कुमार माथुर की कविता 'पंद्रह अगस्त' को कंठस्थ कीजिए।
- 'We shall over come' कविता पढ़िए। उसका हिंदी अनुवाद भी प्राप्त करें।

क्रियाकलाप

- बहुत अधिक इच्छित वस्तु को अचानक मिल जाने से आपको कैसा लगता है? अपने अनुभव को एक अनुच्छेद में लिखिए।
- इसके विपरीत, मान लीजिए आपकी इच्छित वस्तु आपके हाथों आते-आते न मिली, तो आपको कैसा सदमा लगा? तब आपने क्या किया? दस-पंद्रह पंक्तियों में अपने दुख की गाथा लिखिए।
- किसी वस्तु को पाने और न पाने की स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार एवं प्रतिक्रिया अलग होते हैं। कक्षा में उपस्थित छात्र-छात्राओं से उनकी प्रतिक्रियाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN